

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री श्री हनुमान नमः ॥

श्री बजरंग बाण

Bajrang Baan — संपूर्ण बजरंग बाण पाठ, सरल हिंदी भावार्थ एवं पाठ विधि सहित

रचयिता: गोस्वामी तुलसीदास (परंपरागत) ✓ निःशुल्क प्रामाणिक PDF

॥ संपूर्ण बजरंग बाण पाठ (सरल हिंदी भावार्थ सहित) ॥

प्रारंभिक दोहा

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, बिनय करैं सनमान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥

भावार्थ: जो भी भक्त पूर्ण दृढ़ता, निष्कपट प्रेम और अटूट विश्वास के साथ आदरपूर्वक श्री हनुमान जी की विनय (प्रार्थना) करता है, पवनपुत्र हनुमान जी उसके सभी शुभ और मंगलकारी कार्यों को निश्चित रूप से सिद्ध (पूर्ण) करते हैं।

चौपाई १

जय हनुमंत संत हितकारी।
सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी॥

भावार्थ: हे संतों और सज्जनों का सदा कल्याण करने वाले कृपालु श्री हनुमान जी, आपकी सदा जय हो! हे प्रभु! कृपा करके अब मेरी इस दीन प्रार्थना को सुन लीजिए।

चौपाई २

जन के काज बिलंब न कीजै।
आतुर दौरि महा सुख दीजै॥

भावार्थ: हे महावीर! अपने इस शरणागत सेवक के कार्य को सिद्ध करने में तनिक भी विलंब न कीजिए। आप शीघ्रता से दौड़कर आइए और घोर संकट हरकर परम सुख प्रदान कीजिए।

चौपाई ३

जैसे कूदि सिंधु महि पारा।
सुरसा बदन पैठि बिस्तारा॥

भावार्थ: जिस प्रकार आपने विशाल समुद्र को एक ही छलांग में लांघ लिया था और रास्ते में सुरसा के विकराल मुख में चतुराई से प्रवेश करके उसके विस्तार को निष्प्रभावी कर दिया था—

चौपाई ४

आगे जाय लंकिनी रोका।
मारेहु लात गई सुरलोका॥

भावार्थ: आगे बढ़कर जब लंका के द्वार पर लंकिनी राक्षसी ने आपका मार्ग रोका, तब आपने एक ही प्रहार से उसे परास्त कर दिया और वह भयभीत होकर देवलोक को सिधार गई।

चौपाई ५

जाय बिभीषन को सुख दीन्हा।
सीता निरखि परमपद लीन्हा॥

भावार्थ: फिर लंका में जाकर आपने भक्त विभीषण को मिलकर अभय और परम सुख दिया, और अशोक वाटिका में माता जानकी के दर्शन करके उनके पावन चरणों की सेवा का परम पद प्राप्त किया।

चौपाई ६

बाग उजारि सिंधु महँ बोरा।
अति आतुर जमकातर तोरा॥

भावार्थ: आपने रावण के अभिमान के प्रतीक अशोक वाटिका के बाग को उजाड़कर उसके फल-वृक्षों को समुद्र में फेंक दिया और रक्षकों के तीखे अस्त्र-शस्त्रों (यमकातरो) को तत्काल तोड़ डाला।

चौपाई ७

अक्षय कुमार मारि संहारा।
लूम लपेटि लंक को जारा॥

भावार्थ: रावण के पराक्रमी पुत्र अक्षय कुमार का वध करके संहार किया, और अपनी पूंछ में बंधी अग्नि से देखते ही देखते सोने की समूची लंका नगरी को जलाकर भस्म कर दिया।

चौपाई ८

लाह समान लंक जरि गई।
जय जय धुनि सुरपुर नभ भई॥

भावार्थ: लाक्षागृह के समान पूरी लंका धू-धू कर जल उठी और आपके इस अलौकिक पराक्रम को देखकर स्वर्गलोक और आकाश में समस्त देवताओं ने आपकी जय-जयकार की ध्वनि की।

चौपाई ९

अब बिलंब केहि कारन स्वामी।
कृपा करहु उर अंतरयामी॥

भावार्थ: हे मेरे स्वामी! जब आपने पूर्व में ऐसे असंभव कार्य क्षणभर में कर दिए, तो अब मेरे संकट हरने में किस कारण से विलंब हो रहा है? हे सबके हृदय की जानने वाले अंतर्यामी प्रभु! मुझ पर शीघ्र कृपा कीजिए।

चौपाई १०

जय जय लखन प्रान के दाता।
आतुर ह्वै दुख करहु निपाता॥

भावार्थ: लक्ष्मण जी को शक्तिबाण लगने पर संजीवनी बूटी लाकर उनके प्राणों की रक्षा करने वाले हे प्राणदाता! आपकी जय हो, जय हो! अब व्याकुल होकर मेरे इस असह्य दुःख का तत्काल विनाश कर दीजिए।

चौपाई ११

जै हनुमान जयति बल सागर।
सुर समूह समरथ भटनागर॥

भावार्थ: हे अतुलित बल के सागर, समस्त देवताओं के समूह में परम समर्थ और वीरों में श्रेष्ठ चतुर योद्धा श्री हनुमान जी! आपकी सर्वत्र जय-जयकार हो।

चौपाई १२

ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले।
बैरिहि मारु बज्र की कीले॥

भावार्थ: हे प्रण के पक्के, अपने भक्तों की रक्षा के लिए हठपूर्वक तत्पर रहने वाले हठीले हनुमान जी! आप 'हं' बीजमंत्र के दिव्य तेज से मेरे समस्त आंतरिक व बाह्य शत्रुओं पर वज्र के समान तीक्ष्ण कीलें ठोककर उन्हें नष्ट कर दीजिए।

चौपाई १३

गदा बज्र लै बैरिहिं मारो।
महाराज प्रभु दास उबारो॥

भावार्थ: अपने पावन हाथों में वज्र के समान कठोर गदा लेकर समस्त दुष्टों, विघ्नों और शत्रुओं का संहार कीजिए। हे महाराजाधिराज! अपने इस दीन सेवक को इस संकट के सागर से उबार लीजिए।

चौपाई १४

ॐकार हुंकार महाप्रभु धावो।
बज्र गदा हनु बिलंब न लावो॥

भावार्थ: प्रणव ओंकार और हुंकार की सिंहगर्जना करते हुए हे महाप्रभु! रक्षा हेतु दौड़िए। अपनी वज्र गदा से आसुरी शक्तियों का दमन कीजिए और किंचित् भी विलंब मत कीजिए।

चौपाई १५

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा।
ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर सीसा॥

भावार्थ: ह्रीं-बीज-स्वरूप हे वानरराज कपीश्वर! और हुं-बीज के महातेज से आप मेरे शत्रुओं की छाती (उर) और मस्तक (शीश) पर तीक्ष्ण आघात करके उनके दर्प को चूर-चूर कर दीजिए।

चौपाई १६

सत्य होहु हरि शपथ पाइ कै।
राम दूत धरु मारु धाइ कै॥

भावार्थ: भगवान श्री हरि के नाम की पावन शपथ स्मरण करके अपने वचनों को सत्य सिद्ध कीजिए। हे प्रभु श्री राम के अमोघ दूत! संकटों और दुष्ट प्रवृत्तियों को पकड़कर दौड़कर उनका विनाश कीजिए।

चौपाई १७

जय जय जय हनुमंत अगाधा।
दुख पावत जन केहि अपराधा॥

भावार्थ: हे असीम, अथाह और अनंत महिमा वाले श्री हनुमान जी! आपकी सदा जय हो। हे प्रभु! जब आपका यह दास आपकी शरण में है, तो फिर किस अपराध के कारण उसे यह असह्य दुःख भोगना पड़ रहा है?

चौपाई १८

पूजा जप तप नेम अचारा।
नहिं जानत कछु दास तुम्हारा॥

भावार्थ: हे कृपानिधान! मैं आपका अबोध दास हुँ; मैं न तो कोई कठिन पूजा जानता हुँ, न मंत्र-जप, न कठोर तपस्या और न ही शास्त्रोक्त नियम व आचार। मैं केवल आपकी शरणागति जानता हुँ।

चौपाई १९

बन उपबन मग गिरि गृह माहीं।
तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं॥

भावार्थ: चाहे हम घने जंगल में हों, उपवन में हों, निर्जन मार्ग पर हों, ऊंचे पर्वत पर हों या अपने घर के भीतर हों—हे महावीर! केवल आपके असीम बल और कृपा के सहारे हम किसी भी संकट या भय से नहीं डरते।

चौपाई २०

पांय परौं कर जोरि मनावौं।
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥

भावार्थ: मैं आपके पावन चरणों में शीश नवाता हुँ और दोनों हाथ जोड़कर आपको मनाता हुँ। हे प्रभु! जीवन के इस विषम संकट काल में आपके अतिरिक्त मैं और किस द्वार पर जाकर गुहार लगाऊं?

चौपाई २१

जय अंजनि कुमार बलवंता।
शंकरसुवन बीर हनुमंता॥

भावार्थ: माता अंजनी के तेजस्वी एवं महाबलशाली पुत्र, भगवान देवाधिदेव शंकर के रुद्रावतार, परम धीर-वीर श्री हनुमान जी! आपकी सदा सर्वदा जय हो।

चौपाई २२

बदन कराल काल-कुल-घालक।
राम सहाय सदा प्रतिपालक॥

भावार्थ: दुष्टों और अधर्मियों के लिए अत्यंत विकराल रूप धारण करने वाले, काल के वंश का भी संहार करने में समर्थ, और प्रभु श्री राम के परम सहायक व भक्तों का नित्य प्रतिपालन करने वाले कृपालु प्रभु मेरी रक्षा करें।

चौपाई २३

भूत प्रेत पिसाच निसाचर।
अगिन बेताल काल मारी मर॥

भावार्थ: भूत, प्रेत, पिशाच, निशाचर (राक्षसी वृत्तियां), अग्नि-भय, बेताल तथा महामारी रूपी मृत्यु तुल्य कष्ट—ये सभी आपकी हुंकार से तत्काल जलकर नष्ट हो जाएं।

चौपाई २४

इन्हें मारु तोहि सपथ राम की।
राखु नाथ मरजाद नाम की॥

भावार्थ: हे प्रभु! आपको आपके परम आराध्य मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम की शपथ है, इन सभी घोर संकटों और नकारात्मक शक्तियों को मार भगाइए और अपने शरणागत-वत्सल नाम की मर्यादा की रक्षा कीजिए।

चौपाई २५

जनकसुता हरि दास कहावो।
ताकी शपथ बिलंब न लावो॥

भावार्थ: आप जगज्जननी माता जानकी और भगवान श्री हरि के अनन्य दास कहलाते हैं। आपको माता सीता और प्रभु श्री राम की पावन सौगंध है, अब रक्षा करने में किंचित् मात्र भी देर न कीजिए।

चौपाई २६

जय जय जय धुनि होत अकासा।
सुमिरत होत दुसह दुख नासा॥

भावार्थ: आकाशमंडल में दसों दिशाओं में आपकी दिव्य जय-जयकार की ध्वनि गूंज रही है। आपके परम पावन नाम का केवल स्मरण करने मात्र से ही बड़े से बड़ा और असह्य दुःख भी क्षणभर में नष्ट हो जाता है।

चौपाई २७

चरन सरन करि जोरि मनावौं।
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥

भावार्थ: मैं पूर्ण समर्पण के साथ आपके चरणों की शरण में आकर दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हुँ। इस विषम संकट की घड़ी में आपके सिवा मैं अपनी व्यथा सुनाने किसके पास जाऊं?

चौपाई २८

उठु उठु चलु तोहिं राम दुहाई।
पांय परौं कर जोरि मनाई॥

भावार्थ: हे महावीर! आपको मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की दुहाई है, अब तत्काल उठिए और अपने सेवक की रक्षा हेतु चलिए! मैं बारंबार आपके चरणों में नतमस्तक होकर हाथ जोड़कर आपको मना रहा हुँ।

चौपाई २९

ॐ चं चं चं चं चपल चलन्ता।
ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमन्ता॥

भावार्थ: चं-कार की तीव्र चपलता से वायुवेग से चलने वाले, और हं-बीज के महाप्रचंड तेज से जाज्वल्यमान हे हनुमान जी! आप बिजली की गति से पधारकर भक्तों के संकटों को भस्म कर दीजिए।

चौपाई ३०

ॐ हं हं हांक देत कपि चंचल।
ॐ सं सं सहम पराने खल-दल॥

भावार्थ: जब आप 'हं हं' की प्रचंड सिंहगर्जना और हांक लगाते हैं, तब 'सं सं' के कम्पन से समस्त दुष्ट, तामसिक शक्तियां और शत्रुओं के समूह भयभीत होकर थर-थर कांपते हुए पलायन कर जाते हैं।

चौपाई ३१

अपने जन को तुरत उबारो।
सुमिरत होय आनंद हमारो॥

भावार्थ: हे प्रभु! अपने इस शरणागत सेवक को इस घोर संकट से तत्काल उबार लीजिए। आपके पावन स्वरूप का स्मरण करते ही हमारे हृदय में अलौकिक आनंद और शांति का संचार हो जाता है।

चौपाई ३२

यहि बजरंग बाण जेहि मारो।
ताहि कहो फिर कौन उबारो॥

भावार्थ: यह श्री बजरंग बाण जिस किसी भी विपत्ति, संकट, तामसिक शक्ति अथवा अधर्मी पर चल जाता है, इस त्रैलोक्य में फिर कोई भी शक्ति उसे बचा नहीं सकती; उसका अंत सुनिश्चित हो जाता है।

चौपाई ३३

पाठ करै बजरंग बाण की।
हनुमत रक्षा करै प्रान की॥

भावार्थ: जो भी साधक निष्ठा और पवित्रता से इस अचूक बजरंग बाण का पाठ करता है, स्वयं पवनपुत्र हनुमान जी प्रत्यक्ष ढाल बनकर उसके प्राणों, मान-सम्मान और परिवार की रक्षा करते हैं।

चौपाई ३४

यह बजरंग बाण जो जापै।
ताते भूत प्रेत सब कांपै॥

भावार्थ: जो भी मनुष्य श्रद्धापूर्वक इस बजरंग बाण का जप करता है, उसके प्रभाव से समस्त भूत, पिशाच, बुरी नजर, तांत्रिक दोष और नकारात्मक शक्तियां दूर से ही थर-थर कांपने लगती हैं।

चौपाई ३५

धूप देय अरु जपै हमेशा।
ताके तन नहिं रहे कलेशा॥

भावार्थ: जो साधक शुद्ध गुग्गल-लोबान या सुगंधित धूप जलाकर नियमित रूप से इसका जप करता है, उसके शरीर, मन और जीवन में किसी भी प्रकार का कोई क्लेश, व्याधि या पीड़ा शेष नहीं रहती।

समापन दोहा

प्रेम प्रतीतिहिं कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥

भावार्थ: जो भी भक्त अटूट प्रेम और दृढ़ विश्वास के साथ कपीश्वर श्री हनुमान जी का भजन करता है और सदैव अपने हृदय में उनके दिव्य स्वरूप का ध्यान रखता है, हनुमान जी उसके जीवन के समस्त शुभ और कल्याणकारी मनोरथों को निश्चित रूप से सिद्ध कर देते हैं।